शिवबाबा याद है? ओम् शान्ति मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखते हुए तीव्र पुरुषार्थ की रेस करने वाले, निर्विघ्न और एवररेडी बन विजय माला में पिरोने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - अभी जनवरी मास हम सबके सामने आ रहा है। सभी तीव्र पुरुषार्थी भाई बहिनें विशेष जनवरी मास में साकार बाप की स्मृतियों में समाते हुए, इस पूरे मास को अव्यक्त मास के रूप में मनाते हैं और विशेष अन्तर्मुखी, एकान्तवासी बन योग तपस्या भी करते हैं। 15 नवम्बर की मुरली में प्यारे अव्यक्त बापदादा ने विशेष एक मास का होमवर्क देते हुए कहा है कि बच्चे अभी और बातों को न देख तीव्र पुरुषार्थ कर ब्रह्मा बाप के समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनो, निर्विघ्न और एवररेडी रह 108 की माला तैयार करो। तो जरूर आप सब यह पुरुषार्थ कर रहे होंगे!

इस जनवरी मास में विशेष अटेन्शन रख हम सभी एक जैसा पुरुषार्थ कर बाप समान सम्पन्न बन, अपनी सूरत और सीरत द्वारा बापदादा को विश्व के कोने-कोने में प्रत्यक्ष करें, इसी लक्ष्य से ब्रह्मा बाप की 18 विशेषतायें लिख रहे हैं, जो 1 जनवरी से रोज़ मुरली क्लास के पश्चात एक प्वाइंट सभी भाई बहिनों को सुनाना जी। ताकि सभी इन विशेषताओं को स्वयं में धारण कर समान बनने का सबूत दे सकें।

अच्छा। सभी को बहुत-बहुत याद..

ईश्वरीय सेवा में,

B.K. Janki

बी.के. जानकी

बाप समान बनने के लिए ब्रह्मा बाप की 18 विशेषतायें

(विशेष **18** जनवरी निमित्त)

1) हर संकल्प वा कर्म में वारी जाने का अभ्यास

साकार बाप ने अपना सब कुछ विल कर दिया, कभी यह नहीं सोचा कि यह कैसे होगा, क्या होगा.... झाटकू बनें, संकल्प, बोल सब कुछ बाप पर कुर्बान किया, ऐसे फालो फादर करो। मन में जो भी संकल्प उठता है उसमें बाप के प्रति कुर्बान जाने या वारी जाने का रहस्य भरा हुआ हो।

2) त्याग और भाग्य दोनों में नम्बरवन

जैसे ब्रह्मा बाप आदि में स्थापना के कार्य प्रति त्याग और भाग्य दोनों में नम्बरवन निमित्त बने और अब अन्त में भी बच्चों को ऊंचा उठाने के लिए अव्यक्त वतनवासी बने। ऐसे आप बच्चे भी त्याग और भाग्य दोनों में फालो फादर करते हुए स्वयं को और सेवा को सम्पन्न कर बाप समान अव्यक्त वतनवासी बनो। स्नेह स्वरूप को समान स्वरूप में परिवर्तन करो।

3) लौकिकता में भी अलौकिकता का अनुभव

जैसे साकार बाप के कोई भी कर्म से, देखने, उठने, बैठने, चलने और सोने से अलौकिकता दिखाई देती थी। ऐसे आपके हर कर्म में अलौकिकता हो। कोई भी लौकिकता कर्म में वा संस्कारों में न हो। जो सर्वोत्तम पुरुषार्थी हैं उनका सोचना, करना, बोलना तीनों ही एक समान और बाप समान हो। ऐसे श्रेष्ठ पुरुषार्थी बाप समान वरदाता मूर्त बन जाते हैं।

4) सदा लाइट माइट रूप, सिद्धि स्वरूप

जैसे बाप-दादा दोनों लाइट और माइट रूप हैं ऐसे आप बच्चे भी बाप-समान अर्थात् लाइट और माइट स्वरूप बनो। इसके लिए सिर्फ अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित रहो तो देह और देह की दुनिया से दूर अपने लाइट के देश और दुनिया में रह लाइट, हाउस माइट हाउस स्थिति का अनुभव कर सकेंगे। यही सिद्धि स्वरूप स्थिति है।

5) सदा विश्व कल्याण के संकल्पधारी

जैसे साकार बाप ने रात के नींद का समय अथवा अपने शरीर के रेस्ट का समय भी विश्व कल्याण के कर्तव्य में, सर्व आत्माओं के कल्याण प्रति दिया, ना कि अपने प्रति। वाणी द्वारा भी सदा विश्व कल्याण के संकल्प ही करते थे। ऐसे फालो फादर कर विश्व कल्याण के संकल्पधारी बनो। बाप समान बनना है तो चेक करो कि समय और संकल्प सदा ही विश्व-कल्याण प्रति है? अब मन के विघ्नों को हटाने में ही समय और शक्ति व्यर्थ नहीं गंवाओ।

6) कर्म फल की इच्छा से मुक्त

बाप और दादा दोनों ही कोई भी कर्म के फल की इच्छा नहीं रखते हैं, एक तो निराकार होने के नाते से प्रारब्ध ही नहीं है तो इच्छा भी नहीं हो सकती और साकार में प्रैक्टिकल पार्ट बजाया तो भी हर वचन और कर्म में सदैव पिता की स्मृति होने कारण फल की इच्छा का संकल्प मात्र भी नहीं रहा। ऐसे आप बच्चे भी बाप समान निष्काम वृत्ति वाले बनो, पुरुषार्थ के प्रारब्ध की नॉलेज होते हुए भी उसमें अटैचमेंट ना हो तब यथार्थ पालना दे सकेंगे।

7) निरन्तर योगीपन के लक्षण

जैसे ब्रह्मा बाप के हर संकल्प, हर बोल में नम्रता, निर्माणता और महानता अनुभव होती थी। स्मृति स्वरूप में एक तरफ बेहद का मालिकपन, दूसरी तरफ विश्व के सेवाधारी, एक तरफ अधिकारीपन का नशा, दूसरी तरफ सर्व के प्रति सत्कारी, सर्व आत्माओं के प्रति दाता व वरदाता बनकर रहे। ग्लानि व निन्दा के बोल भी महिमा व गायन योग्य अनुभव किये, ऐसे फालो फादर। बाप समान हर आत्मा को अपने से भी आगे बढ़ाने की शुभ भावना रखते हुए विश्व-कल्याणकारी बनो। यही हैं निरन्तर योगीपन के लक्षण।

8) परिवर्तन शक्ति द्वारा सदा विजयी

जैसे ब्रह्मा बाप ने निंदा को स्तुति में, ग्लानि को गायन में, अपमान को स्व-अभिमान में, अपकार को उपकार में परिवर्तन किया, ऐसे आप भी परिवर्तन शक्ति द्वारा किसी के बोल और भाव को परिवर्तन कर दो तब कहेंगे बाप समान सदा विजयी। सिर्फ स्नेही आत्माओं के प्रति सहयोगी नहीं, होपलेस केस में वा नाउम्मींदवार को उम्मीदों का सितारा बना दो, तब कहेंगे कमाल।

9) संकल्प वा स्वप्न मात्र भी लगाव मुक्त

जैसे ब्रह्मा बाप पुरानी दुनिया में रहते किसी भी व्यक्ति वा वैभव से संकल्प-मात्र वा स्वप्न-मात्र भी लगावमुक्त रहे, सदा स्वयं को संगमयुगी समझ सारी सृष्टि की आत्माओं को कल्याण और रहम की दृष्टि से देखा। ऐसे फालो फादर। पुराने संस्कार और स्वभाव से उपराम, सदा साक्षीपन की सीट पर स्वयं को सेट हुआ अनुभव करो, यही है लगावमुक्त आत्मा की निशानियां।

10) सर्वगुणों में मास्टर सागर

जैसे ब्रह्मा बाप सर्वगुणों में मास्टर सागर बनें, सर्व शक्तियों का वर्सा प्रैक्टिकल जीवन में अनुभव किया। साथ-साथ आत्मा की जो श्रेष्ठ व महान् स्टेज है - सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पन्न, मर्यादा पुरुषोत्तम और सम्पूर्ण अहिंसक - इस महानता को जीवन में लाया। ऐसे अपने आपको चेक करो कि सर्व गुणों, सर्व कलाओं में कहाँ तक सम्पन्न बने हैं? जैसा समय वैसा स्वरूप बना सकते हैं?

11) निमित्त भाव से नैचुरल सेवाधारी

जैसे ब्रह्मा बाप सदा अपने को निमित्त मात्र अनुभव करते रहे। मैं निमित्त हूँ, सेवाधारी हूँ, यह नेचुरल स्वभाव बनाया। हर बात में अन्य आत्माओं को आगे बढ़ाने के लिए ''पहले आप'' का पाठ पक्का किया। पहले मैं नहीं, पहले आप कहने से हर आत्मा के कल्याण के निमित्त बनें। अपने सुख के साधनों का, अपने गुणों का और अपनी प्राप्त हुई सर्वशक्तियों का भी अन्य आत्माओं की उन्नति-अर्थ दान करने वाले महादानी बनें, ऐसे फालो फादर करो तब जिस आत्मा के प्रति जो संकल्प करेंगे या जो बोल बोलेंगे, वह उस आत्मा के प्रति वरदान हो जायेगा।

12) गुणों और शक्तियों के भण्डार

जैसे बापदादा सर्व गुणों और शक्तियों के भण्डार हैं और बच्चों को भी सदा सम्पूर्ण स्वरूप में देखते हैं कि मेरा हर बच्चा बाप समान आनन्द, प्रेम, सुख, शान्ति स्वरूप है। हर एक गुण और शक्ति का भण्डार है। तो आप भी अपने को सदैव ऐसे सम्पन्न समझकर चलो। ऐसी सम्पन्न आत्मा, सदैव स्वयं प्रति शुभ-चिन्तन में रहेगी और अन्य आत्माओं के प्रति शुभ-चिन्तक रहेगी।

13) गम्भीरता और रमणीकता का बैलेन्स

जैसे ब्रह्मा बाप की विशेषता सूरत में सदा गम्भीरता के चिन्ह और मुस्कराहट देखी। अभी-अभी मनन चिंतन करने वाला चेहरा और फिर रमणीक अर्थात् मुस्कराता हुआ चेहरा, दोनों ही लक्षण सूरत में देखे, ऐसे आपकी सूरत भी ब्रह्मा बाप के कॉपी स्वरूप हो। सूरत और सीरत से ब्रह्मा बाप दिखाई दे। जब ब्रह्मा बाप समान सब कापियाँ तैयार हो जायेंगी तब बेहद का बारुद चलेगा, पटाके छूटेंगे और ताजपोशी होगी। तो अब यह डेट फिक्स करो।

14) सदा व्यक्त में रहते अव्यक्त डबल लाइट फरिश्ता

जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त फरिश्ते के रूप में चारों ओर की सेवा के निमित्त बने हैं। ऐसे बाप समान स्वयं को भी लाईट स्वरूप आत्मा और लाईट के आकारी रूप फरिश्ते स्वरूप में अनुभव करो। स्नेह का सबूत है - समान बनना अर्थात् डबल लाईट बनना। जब ऐसे समान बनेंगे तब सदा समर्थ और विजयी रहेंगे। समान नहीं तो कभी हार, कभी जीत, इसी हलचल में होंगे।

15) सदा परोपकारी और मरजीवे जन्म में बाल ब्रह्मचारी

समीपता का आधार श्रेष्ठता है। श्रेष्ठता का आधार - एक ब्रह्मा बाप समान सदा परोपकारी, दूसरा - मरजीवे जीवन के आदिकाल अर्थात् बाल्यकाल से अब तक सदा ब्रह्मचारी। ब्रह्मचारी जीवन अर्थात् ब्रह्मा समान पवित्र जीवन, जिसको ब्रह्मचारी कहो या ब्रह्माचारी कहो - आदि से अन्त तक अखण्ड, किसी भी प्रकार की पवित्रता अर्थात् स्वच्छता खण्डित न हो तब परम पूज्यनीय बनेंगे, इसे ही फालो फादर कहते हैं।

16) मेहनत के बजाए सदा मुहब्बत में समाये हुए

जैसे ब्रह्मा बाप सदा बालक सो मालिक बन, मेहनत के बजाए मुहब्बत में समाये रहे। कभी मालिकपन की स्टेज से नीचे नहीं आये। ऐसे फालो फादर। यह संगमयुग मुहब्बत का युग, मिलन का युग, शमा और परवाने के समाने का युग है। संगमयुग की प्रालब्ध है – बाप समान स्टेज अर्थात् सम्पन्न स्टेज के तख्तनशीन। यह प्रालब्ध अभी और बहुत समय पानी है। जब कहते हो पा लिया, तो क्या सिर्फ उतरना चढ़ना पा लिया, मेहनत पा लिया या प्रालब्ध को पा लिया? इसलिए अब बाप समान बालक सो मालिक बन, मेहनत को छोड़ मुहब्बत में समाये रहो।

17) व्यक्त से अव्यक्त और अव्यक्त से व्यक्त में आने का अभ्यास

जैसे बाप अव्यक्त होते व्यक्त में प्रवेश हो कार्य करते हैं वैसे बाप समान अर्थात् अव्यक्त स्थिति में रह व्यक्त कर्मेन्द्रियों से कर्म कराना। दृष्टि, वाणी, संकल्प सब बाप समान हो। जितनी-जितनी समीपता उतनी समानता। जैसे नदी सागर में समाकर सागर स्वरूप हो जाती है, ऐसे आप बच्चे साकार होते निराकार स्वरूप के लव में खोये रहो, व्यक्त से अव्यक्त और अव्यक्त से व्यक्त में आने का अभ्यास करो तो आपका स्वरूप भी बाप समान हो जायेगा। जो अनुभव ब्रह्मा का साकार में था, वही बच्चों का भी हो।

18) गुणमूर्त द्वारा श्रेष्ठ वायब्रेशन फैलाने वाले

जैसे ब्रह्मा बाप रात को भी जाग करके वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा करते थे। इस बात में जो ओटे सो अर्जुन। दिन में कोई भी सेवा करते शक्तिशाली स्मृति स्वरूप में रहो। सेवा के समय यह ध्यान रखो कि गुण-मूर्त होकर सेवा करनी है तो डबल जमा हो जायेगा। सेवाधारी अर्थात् बाप के कदम के ऊपर कदम रखने वाले, जरा भी आगे पीछे नहीं। चाहे मंसा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, चाहे सम्पर्क सबमें फुट स्टैप लेने वाले। एकदम पाँव के ऊपर पाँव रखने वाले इसको कहा जाता है फुट स्टैप लेने वाले।

ओम् शान्ति 01-12-11 मधुबन

स्मृति दिवस (18 जनवरी – 2012) से सम्बन्धित विशेष सूचनायें

1) हम सबने परमात्म प्यार को दिल में समाया हुआ है। सबके दिल में यही गीत बजता कि इतना प्यार करेगा कौन! यह बाप और बच्चों का आत्मिक प्यार देह से न्यारा बनाने वाला है। ऐसे परमात्म प्यार में समाने की प्वाइंटस जनवरी मास की हर मुरली के नीचे लिखी गई हैं, जिसके आधार पर आप सब विशेष मुरली के पश्चात 10 मिनट उसी लवलीन स्थिति का अनुभव करना जी।

2) ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के लिए ब्रह्मा बाप की 18 विशेषतायें लिखी जा रही हैं, जो ब्रह्मा बाप ने प्रैक्टिकल जीवन में करके दिखाया, इन्हें स्मृति में रखते हुए जनवरी मास में हम सब ब्रह्मा वत्स विशेष तीव्र पुरुषार्थ कर समानता और सम्पन्नता को प्राप्त कर सकते हैं।

3) इस अव्यक्त मास में हर एक अपनी स्व-स्थिति को अच्छे से अच्छा बनाने के लिए विशेष प्रतिदिन 8 घण्टे योग अभ्यास अवश्य करें। सवेरे 4 से 8 बजे तक और शाम को 6 से 10 बजे तक विशेष मौन में रहें, एकान्तवासी बने, मन और मुख के मौन से अनुभवों की गहराई में जाएं तथा मन्सा सेवा का अभ्यास बढ़ायें।

4) पूरा ही जनवरी मास सभी लक्ष्य रखें कि हमें डबल लाइट अव्यक्त फरिश्ता स्थिति के अनुभव में ही रहना है। कार्य व्यवहार में आते जहाँ तक हो सके अन्तर्मुखता पर विशेष ध्यान देना है। ''कम बोलो, धीरे बोलो और मीठा बोलो'', इस स्लोगन को स्मृति में रखते हुए संकल्प, बोल और समय की विशेष इकॉनामी करके जमा के खाते को बढ़ाना है। हलचल में भी अचल रहने का पुरुषार्थ करना है।

5) कोई भी बात देखते, सुनते, क्वेश्चन मार्क के बजाए फुलस्टाप लगाना है। क्यों, क्या, कैसे...के प्रश्नों से पार रह सदा प्रसन्नचित स्थिति में रहना है। अपने हर संकल्प, बोल और कर्म को ब्रह्मा बाप से मिलाना है।

6) विशेष स्मृति दिवस के निमित्त प्यारे बापदादा की मधुर शिक्षाओं भरी अति गुह्य और रमणीक साकार और अव्यक्त महावाक्यों की मुरली आप सबके पास भेजी गई है, उसे 18 जनवरी के दिन क्लास में विशेष एकाग्रचित होकर सुनें और पढ़ें तथा उसे सारा दिन अभ्यास में लायें।

7) 18 जनवरी 2012, बुद्धवार का दिन सभी स्थानों पर ''विश्व शान्ति दिवस'' के रूप में मनाया जाए। सभी अपने-अपने लौकिक कार्य-व्यवहार से छुट्टी लेकर पूरा दिन अव्यक्त वतन की सैर करते, अमृतवेले से शाम तक विशेष योग तपस्या करें। मुरली क्लास के पश्चात सेवाकेन्द्र पर ही सभी हल्का नाश्ता (फल दूध) लेकर योग भट्ठी करें। दोपहर के समय अपने-अपने स्थानों पर जा सकते हैं। शाम के समय जहाँ डायरेक्ट अव्यक्त महावाक्य सुन सकते हैं वहाँ सुनें, अगर ऐसा प्रबन्ध नहीं है तो योग का ही प्रोग्राम चलता रहे।

8) बापदादा के जीवन चरित्र पर सार्वजनिक कार्यक्रम अपनी-अपनी सुविधा अनुसार 21 जनवरी तक किसी भी दिन रख सकते हैं, जिसमें साकार बाबा की शिक्षायें, उनसे मिली हुई दिव्य पालना का अनुभव कोई न कोई भाई बहिन सुनाये, सम्बन्ध-सम्पर्क वाले भाई बहिनों को भी इस अव्यक्त दिवस की अनुभूति के लिए विशेष आमन्त्रित करें तथा उन्हें अलौकिक दिव्य वातावरण तथा बापदादा के दिव्य कर्तव्यों से अवगत करायें।

9) बापदादा की जीवन से सम्बन्धित लेख समाचार पत्रों में प्रकाशित करवाये जायें तथा टी.वी. रेडियों द्वारा भी इसका प्रसारण हो जिससे अनेक आत्माओं को दिव्य सन्देश मिल सके। बाबा के जीवन चरित्र की वी.सी.डी. केबल टी.वी. द्वारा प्रसारित करवाई जाए।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद... ओम् शान्ति।

ओम् शान्ति 3-12-11 मधुबन

तीव्र पुरुषार्थियों के लिए विशेष चार्ट

1) सर्व शक्तियाँ समय पर आर्डर प्रमाण कार्य करती हैं?
2) किसी भी परीक्षा के समय बापदादा की शिक्षायें वा विशेषतायें याद आती हैं?
3) सोचना, बोलना और करना तीनों समान हैं?
4) मन को मननचिंतन, कर्मयोग वा सेवा में बिजी किया है?
5) व्यर्थ को सेकण्ड में स्टाप कर सकते हैं?
6) संगम का समय, एक एक सेकण्ड सफल हो रहा है?
7) दृढ़ता के संकल्प से कारण को सेकण्ड में निवारण कर सकते हैं?
8) अमृतवेले का योग लाइट माइट सम्पन्न,पावरफुल है?

——

(सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, बापदादा के तीव्र पुरुषार्थी भव के वरदान अनुसार यह चार्ट एक मास के लिए नोट करके अपने आपको ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने की रेस करें)